IJAER/ June-July 2012 /Volume-1/Issue-1/Article No-21/124-128 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

अलका कुमारी
शोधार्थिनी
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय

डॉ0 कुलदीप कुमार
शोध निर्देशिक
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय

किसी सभ्य समाज के लिये शिक्षा प्राण हैं तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा। मूल्य–शिक्षा के नीति–निर्देशक तत्व है, ये मानव के व्यवहार को नियंत्रित और निर्देर्शित करते हैं। मूल्य–विहीन शिक्षा निरर्थक एव निर्जीव समझी जाती है। हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा की संरचना मूल्यों पर आधारित होतो है। शिक्षा स्वय में सबसे बड़ा मूल्य है। इसका प्रभाव व्यक्ति के ऊपर बहुत गहरा पड़ता है। मूल्य के आधार पर ही मनुष्य अपने जीवन दृष्टिकोण को बनाता है। मूल्य ही मानव जीवन को अर्थ, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते है।

शिक्षण एक मूल्य अभिमुख कार्य है तथा मूल्यों क शिक्षण से बचना अशोभनीय है। मूल्यों की शिक्षा में विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। मूल्यों के शिक्षण की अभिव्यक्ति न केवल पाठ्यक्रम वरन विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के मध्य की अन्तःक्रियाओं में भी होती है।

इस शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तकें मूल्यों को निश्चित रूप से प्राप्त करती हैं या नहीं अथवा पाठ्य–पुस्तकों में सम्मिलित पाठों में मूल्य निहित है या नहीं। पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक अध्ययन पाठ्य–पुस्तकों में इन मूल्यों का अध्ययन किया गयाः–

1. सामाजिक मूल्य
2. चारित्रिक मूल्य
3. सांस्कृतिक मूल्य
4. नागरिकता सम्बन्धी मूल्य
5. सौन्दर्यानुभूति मूल्य
6. वैज्ञानिक मूल्य, तथा
7. धार्मिक मूल्य

प्रस्तुत शोध मे प्रमुख रूप से तीन विधियों का प्रयोग किया गयाः–

क. पाठ्य–सामग्री विश्लेषण विधि
ख. सर्वेक्षण विधि,
ग. संख्यात्मक मान–निर्धारण पैमाना विधि
(पांच बिन्दुओं पर आधारित मापक)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथा प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों से प्राप्त उत्तरो के आधार पर पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक के द्वारा पुस्तक की श्रेणी निर्धारित की गयी। श्रेणियों का योग करके उनके प्रतिशत के आधार पर पुस्तक का स्तर निर्धारित किया गया।

पाठ्य पुस्तकें एक योग्य पाठक वर्ग रखती हैं और पाठ्य पुस्तकों के द्वारा ज्ञान का वितरण नियंत्रित किया जा सकता है। पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण व तैयारी में कई सार्वजनिक क्षेत्र पनप रह हैं। यह एक सार्थक तथ्य है कि पाठ्य–पुस्तकों का प्रभाव बढ़ रहा है किन्तु साथ ही साथ सामान्य पुस्तकों का प्रभाव कम हो रहा है। पाठ्य–पुस्तकों में बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में वितरण एवं संरक्षण का एक जाना–माना स्रोत है। केरल में एक अध्ययन दर्शाता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी पाठ्य–पुस्तकों में वर्ष 1952 से 1975 के मध्य तेरह बार बदलाव लाया गया। विद्यार्थी और रखरखाव के स्तर पर इन बदलावों का प्रभाव अभी तक अध्ययन का विषय है।

बालकों की मातृभाषा और पाठ्य–पुस्तकों की भाषा के बीच का अन्तर भी अध्ययन का विषय है। केवल आन्ध्र प्रदेश में एक मामला है जहाँ भाषा विज्ञानवेत्ता **'ग्रंथिका'** नामक पाठ्य पुस्तक की शैली को **'सिस्ता व्यवहारिका'** के रूप में बदलने में सफल हुए क्योंकि 'ग्रंथिका' की शैली तेलुगु भाषा बोलने वालों की बोली जाने वाली भाषा में नहीं है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी शैक्षिक उपलब्धि बोलचाल के स्तर पर बदलाव लाना है। अभी तक एक तरफ तो भाषा और अन्य विषयों की पाठ्य–पुस्तकों में और पाठ्य–पुस्तकों में भाषा की अनुकूलता पर वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना बाकी है।

पाठ्य–पुस्तकों की निर्माता कम्पनियों के द्वारा किसी के अध्ययन किये गये कार्य को प्रायोजित और वैधानिक करने के कड़े प्रयास किये जा रहे हैं। पाठ्य–पुस्तक निर्माता कम्पनियों, लेखक, पुनः अध्ययनकर्ता, प्रकाशक और प्रकाशित पाठ्य–पुस्तकों के बीच एक अनचाही दरार रहेगी जब तक कि स्वतंत्र शैक्षिक व्यक्तित्व इनके मूल्यांकन की जिम्मेदारी नहीं लेते।

इसमें साधारण पाठ्य–पुस्तक अध्ययनों से जटिल शिक्षण–परीक्षण प्रकरणों की एक विशाल नवीन श्रृंखला सम्मिलित है। सच्चाई यह भी है कि पाठ्य–पुस्तकों के विभिन्न भागों पर बहुत बड़ी संख्या में अध्ययन किये गये हैं। विभिन्न राज्य संगठनों को अनदान दिये जाने और उनके रूचि लेने के कारण हाल ही में ऐसे अध्ययनों में एक बहुत बड़ा उछाल आया है। महाराष्ट्र के पाठ्य–पुस्तक निर्माण और पाठ्यक्रम अनुसंधान बोर्ड ने पिछले तीन दशकों में पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकों पर कई उपयोगी अनुसंधानों द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक सामान्य सर्वेक्षण बताता है कि मुख्यतः अध्ययन मध्यम और उच्च विद्यालय स्तर पर किये जा रहे हैं। निम्न प्राथमिक शिक्षा और विश्वविद्यालयी शिक्षा की पूरी तरह से अवहेलना की गयी है।

इसी तरह से पाठ्यक्रम व पाठ्य–पुस्तकों पर किये गये अध्ययनों में गहनता और विश्लेषण का अभाव देखा जा सकता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में पाठ्य–पुस्तकें तथा अध्यापक मार्गदर्शिकाएँ एक अद्वितीय स्थान रखती हैं। पाठ्य–पुस्तकों और सहायक सामग्री का चयन व पुनः अध्ययन आकस्मिक तरीके से नहीं किया जा सकता। यह कार्य एक व्यवस्थित मूल्यांकन और अनुसधान के आधार पर किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में हमारे देश में बहुत कम अध्ययन किये गये हैं। एन0सी0ई0आर0टी0 ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। एन0सी0ई0आर0टी0 ने देश में सभी भाषाओं की पाठ्य–पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए एक कार्यक्रम की जोर–शोर से शुरूआत की है। एन0सी0ई0आर0टी0 के पाठ्य–पुस्तकों के विभाग में वर्ष 1970–72 के दौरान विभिन्न भाषाओं और विषयों, जैसे–इतिहास, भूगोल, सामान्य विज्ञान, भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकों की तैयारी और मूल्यांकन पर अलग–अलग अध्ययन किये गये।

इस अध्ययन में जनपद अमरोहा में स्थापित पूर्व माध्यमिक स्तर के 150 सामाजिक अध्ययन शिक्षकों को सम्मिलित किया गया जिनमें 75 शिक्षक बेसिक शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों से तथा 75 शिक्षक केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों से लिये गये।

निष्कर्ष

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–6 की बेसिक शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. कक्षा–6 की सामाजिक अध्ययन पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष साधारण हैं,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक में पाठों का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,
4. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. पाठ्य–पुस्तक में दिये गये अभ्यासार्थ प्रश्नों का पक्ष अच्छा है।
6. पाठ्य–पुस्तक में सहायक ग्रन्थों की सूची नहीं दी गयी है, अतः इस मानक की श्रेणी निकृष्ट है,
7. पाठ्य–पुस्तक में दी गयी विषय–सूची सर्वोत्कृष्ट है,
8. पाठ्य–पुस्तक में दिये गये पाठों के लेखकों की श्रेणी सर्वोत्कृष्ट है,

उपरोक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

निष्कर्ष (ब)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–7 की बेसिक शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष साधारण हैं,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक में पाठो का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,
4. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. पाठ्य–पुस्तक में दिये गये अभ्यासार्थ प्रश्नों का पक्ष अच्छा है।
6. सहायक ग्रन्थों की सूची पक्ष निकृष्ट है,
7. विषय–सूची पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,
8. लेखक पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,

कुल मिलाकर पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

निष्कर्ष (स)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–8 की बेसिक शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष साधारण हैं,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,
4. पाठ्य–पुस्तक का उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. अभ्यासार्थ प्रश्न पक्ष अच्छा है।
6. सहायक ग्रन्थों की सूची पक्ष निकृष्ट है,
7. विषय–सूची पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,
8. लेखक पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,

कुल मिलाकर पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

निष्कर्ष (द)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–6 की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष अच्छा ह,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक में पाठों का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,
4. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया अभ्यासार्थ प्रश्न पक्ष अच्छा है।
6. सहायक ग्रन्थों की सूची पक्ष निकृष्ट है,
7. पाठ्य–पस्तक का विषय–सूची पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,
8. पाठ्य–पुस्तक का लेखक पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,

कुल मिलाकर पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

निष्कर्ष (य)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–7 की राष्ट्रोय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष अच्छा हैं,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक में पाठों का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,

4. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया अभ्यासार्थ प्रश्न पक्ष अच्छा है।
6. पाठ्य–पुस्तक की सहायक ग्रन्थों की सूची पक्ष निकृष्टतम है,
7. पाठ्य–पुस्तक का विषय–सूची पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,
8. पाठ्य–पुस्तक का लेखक पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,

कुल मिलाकर पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

निष्कर्ष (र)

पाठ्य–वस्तु विश्लेषण तथ्य मानकों पर आधारित प्रश्नावली के द्वारा शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर कक्षा–8 की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक का पाँच बिन्दुओं पर आधारित मापक द्वारा मानकों के परिप्रेक्ष्य में किये गये मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्षः–

1. पाठ्य–पुस्तक का यांत्रिक पक्ष अच्छा हैं,
2. पाठ्य–पुस्तक का व्यवस्था पक्ष अच्छा है,
3. पाठ्य–पुस्तक में पाठों का प्रस्तुतीकरण पक्ष अच्छा है,
4. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया उदाहरण पक्ष साधारण है,
5. पाठ्य–पुस्तक में दिया गया अभ्यासार्थ प्रश्न पक्ष अच्छा है।
6. पाठ्य–पुस्तक की सहायक ग्रन्थों की सूची पक्ष निकृष्टतम है,
7. पाठ्य–पुस्तक का विषय–सूचो पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,
8. पाठ्य–पुस्तक का लेखक पक्ष सर्वोत्कृष्ट है,

कुल मिलाकर पाठ्य–पुस्तक बहुत अच्छी है।

किन्तु पुस्तकों को सर्वोत्कृष्ट बनाने के लिये इनमें कुछ सुधार की आवश्यकता है, यथा :–

बेसिक शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0 द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन पाठ्य–पुस्तकों में सुधार के लिये सुझाव

1. कक्षा 6, 7 एवं 8 की सामाजिक अध्ययन पाठ्य–पुस्तक के बाह्य स्वरूप को और अधिक आकर्षक बनाया जाना चाहिये।
2. पुस्तकों में उत्तम किस्म का कागज प्रयुक्त किया जाना चाहिये।
3. पाठ के प्रारम्भ में पाठ का परिचय दिया जाना चाहिये।
4. पुस्तक में उदाहरणस्वरूप दिये गये चित्र अधिक आकर्षक एवं आधुनिकतम होने चाहिये।
5. पुस्तक के अन्त में सहायक ग्रन्थों की सूची अवश्य दी जानी चाहिए।
6. पाठ के अन्त में सारांश अवश्य दिया जाना चाहिये।
7. पुस्तक की सिलाई मजबूत किये जाने की आवश्यकता है।
8. पाठ के अन्त मे उपयक्त निर्देश दिये जाने चाहिये।
9. महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को मोटे अथवा तिरछे आकार में छापा जाना चाहिये।
10. पाठ के अन्त में पाठ में निहित मूल्य बताया जाना चाहिये।
11. पाठ्य पुस्तक में उचित हाशिया दिया जाना चाहिये।

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित सामाजिक अध्ययन पाठ्य–पुस्तकों में सुधार के लिये सुझाव

1. पुस्तक में उदाहरण स्वरूप दिये गये चित्र रंगीन होने चाहिये,
2. पुस्तक के प्रारम्भ में पाठ के सलाहकार एवं सदस्य का परिचय दिया जाना चाहिये,
3. पुस्तक के अन्त में सहायक ग्रन्थों की सूची अवश्य दी जानी चाहिये,
4. पाठ के अन्त में सारांश अवश्य दिया जाना चाहिये,
5. पाठ के अन्त में उपयुक्त निर्देश दिये जाने चाहिये,
6. महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को मोटे अथवा तिरछे आकार में छापा जाना चाहिये,
7. पाठ के अन्त में पाठ में निहित मूल्य बताया जाना चाहिये।

शोध का शैक्षिक निहितार्थ अनुप्रयोग

कोई भी सिद्धान्त सदैव उपयोगी नहीं रहता है। समय एवं परिस्थितियों के अनुसार उसकी उपयोगिता का मूल्यांकन किया जाता है, अतः समय एवं वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण करते रहना चाहिये। नवीन समाचारों तथा खोजों का समावेश अवश्य होना चाहिये।

यह शोध पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक अध्ययन पाठ्य पुस्तकों के मूल्यांकन पर आधारित हैं, अतः पाठ्य–पुस्तक लेखकों, सलाहाकार, सदस्यों एवं प्रकाशकों के लिये इस शोध का अनुप्रयोग अधोलिखित बिन्दुओं में किया जाना समीचीन होगा।

1. सामाजिक अध्ययन पाठ्य पुस्तकों की पाठ्यचर्या में समाज के पिछड़े वर्ग, आदिवासी लोगों के बलिदानों को निर्द्वन्द्व भाव से उजागर किये जाने की आवश्यकता है। स्वतन्त्रता का यह आन्दोलन किसी पार्टी, वर्ग, परिवार आदि का आन्दोलन नहीं था। इसमें समाज के समस्त घटक सम्मिलित थे। इनकी पीड़ा को समझकर ही गांधीजी का 'वैष्णवजन तो मते ने कहिए जो पीर पराई जाने रे' भजन चरितार्थ होगा। पिछड़े वर्गों के उत्थान द्वारा राष्ट्र हित की भावनाओं को विकसित करना आज की बुनियादी आवश्यकता है।
2. पर्यावरण संरक्षण की समस्या को पाठ्यचर्या का अग बनाना स्वागत योग्य है। यहाँ भी प्राचीन साहित्य के उन पक्षों को आगे लाने की आवश्यकता है जिनमें मानव समाज को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाया गया है। पाठ्यक्रम ऐसा हो जो बच्चे के सम्पूर्ण पर्यावरण से जुड़ा हो। उसके आस–पास जो हो रहा है उसी की चर्चा उसमें हो।
3. हमारी शिक्षा नीति में कहीं भी धर्म का विरोध नहीं मिलता। अतः विश्व के सभी धर्मों के मुख्य उपदेशों को पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया जाये जिससे छात्रों को सभी धर्मों की जानकारी हो सके और वे सभी धर्मों को सम्मान की दृष्टि से देखें जिससे उनमें सर्व–धर्म–सम्भाव की भावना जाग्रत हो सके।
4. पाठ्यचर्या के लिए उस साहित्य का चयन करना होगा जिसमें समाज में व्याप्त सभी समस्याओं का उल्लेख हो तथा इन समस्याओं के समाधान के लिए रचनात्मक सन्देश दिया गया हो।
5. पाठ्य–पुस्तकों में दिए गये पाठ में बदलाव तो नहीं किया जा सकता लेकिन उन्हें वर्तमान सन्दर्भों में आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिये।
6. दहेज प्रथा, पुरूष और स्त्री की असमानता, सती प्रथा तथा बाल–विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को भी पाठ्य सामग्री में स्थान देने की आवश्यकता है।
7. पुस्तक के अन्त में विशेष सन्दर्भों की व्याख्या की जानी चाहिये जिनकी सहायता से विषय–वस्तु को समझने में सहायता मिलती है।
8. हमारेदेश में जनसंख्या वृद्धि विस्फोटजनक स्थिति में है, अतः यह आवश्यक है कि देश का प्रत्येक नागरिक जनसंख्या के विषय में जानकारी अवश्य प्राप्त करें। जनसंख्या शिक्षण का प्रारम्भ बच्चों के लिये प्राथमिक स्तर पर सीमित एवं चयनित रूप में किया जाना चाहिये। इस स्तर पर स्वास्थ्य एवं हाइजीन, पौष्टिक आहार एवं खाद्य, सफाई, स्वच्छता एवं पर्यावरण इत्यादि से सम्बन्धित पाठ सम्मिलित किये जाने चाहिये।
9. अलग–अलग कक्षा की पाठ्य पुस्तकों में अलग–अलग लेखकों की रचनायें सम्मिलित की जानी चाहिये। शोध के समय यह पाया गया कि कक्षा 6, 7 एवं 8 की सामाजिक अध्ययन पाठ्य पुस्तकों में एक ही लेखक की अलग–अलग रचनायें सम्मिलित हैं।
10. पाठ्य पुस्तकों में आधुनिक तकनीकी एवं परिवर्तनों को भी सम्मिलित किये जाने चाहिये जिससे छात्र आधुनिक तकनीकी से परिचित हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुच एम0बी0 (एडी) : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0, 1987
5. डॉ0 आर0 ए0 शर्मा : शिक्षा अनुसंधान, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, 1985–86
7. डॉ0 एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज–शास्त्रीय आधार, लायल बुक डिपो, मेरठ, 2002–03
10. डॉ0 बी0 एल0 शर्मा : सामाजिक अध्ययन शिक्षण आई0 पी0 एच0 पब्लिशिंग हाउस, मेठर
12. डॉ0 एस0के0 मंगल : शिक्षा में मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा